दिव्य लीलामृत

उनके दर्शन मात्र से
जीव पवित्र हो जाते हैं

SGD

"यद्यपि श्रील गुरुदेव ने वहाँ न कोई हरिकथा कही, न हरिनाम की महिमा कही, और न ही किसी के साथ कोई साधारण वार्तालाप भी किया, फिर भी उस स्थान पर उनकी दिव्य उपस्थिति ही प्रत्येक व्यक्ति को भगवान के नाम का कीर्तन और श्रवण करने के लिए प्रेरित कर रही थी।"

SGD

श्रीलगुरुदेव

SGD

श्रीश्रीगुरु-गौरांगौ जयतः

अस्पताल में दिन बीतते जा रहे थे। चिकित्सा सम्बंधित जांच और प्रक्रियाओं के समय, श्रील गुरुदेव अधिकतर शांत ही रहे, किसी भी चीज पर उन्होंने कोई आपत्ति नहीं जताई। और, न ही हमारी किसी भी बात का उन्होंने कोई प्रत्युत्तर दिया। कभी-कभी, हमने उन्हें बाह्य चेतन अवस्था में 'भगवान्' या 'हरे राम' जैसे कुछ शब्दों का उच्चारण करते हुए सुना। हाँ,

किन्तु जब भी उन्हें कीर्तन की आवाज़ सुनाई देती थी वे तुरंत ही सक्रिय हो जाते थे और कोई न कोई संकेत द्वारा कीर्तन करनेवाले भक्तों का उत्साह बढ़ा देते थे।

श्रील गुरुदेव के ऐसे संकेतों से उत्साहित होकर, भक्तों ने अस्पताल के बाहर प्रतिदिन संकीर्तन करना आरम्भ कर दिया। एक दिन, जब श्रीमद् भक्ति विबुध मुनि महाराज संकीर्तन का नेतृत्व कर रहे थे,

श्रील गुरुदेव ने अपना मस्तक उस कोने की ओर मोड़ लिया जहाँ से कीर्तन की ध्वनि आ रही थी और वे कीर्तन सुनने में मग्न हो गए। इतने में भक्तों को श्रील गुरुदेव के स्वास्थ्य के बारे में जानकारी देने के लिए श्रीमुनि महाराज ने कीर्तन को कुछ समय के लिए विराम दिया। तब श्रील गुरुदेव ने हमें पूछा, "वे क्या कह रहे हैं?" किन्तु शीघ्र ही कीर्तन पुनः आरम्भ हो गया, और वे उसमें ध्यान-मग्न हो गए। कुछ समय के बाद, जब

कीर्तन को पूर्ण विश्राम दिया गया, तो उन्होंने दुबारा पूछा, "क्या कीर्तन समाप्त हो गया?" हमने 'हाँ' में उत्तर दिया। उन्होंने फिर पूछा, "और नहीं होगा?" स्वास्थ्य की ऐसी गंभीर स्थिति में भी उनकी ऐसी प्रतिक्रिया और आदान-प्रदान ने हमें आश्चर्यचकित कर दिया और साथ-साथ आनंद का भी अनुभव करवाया। अंततः हमने श्रील प्रभुपाद के शिष्यों द्वारा गाए हुए कीर्तन ऑडियो प्लेयर में चलाए, जिसे सुनकर वे धीरे-धीरे

अपनी अन्तर्दशा में चले गए। उस दिन से, श्रील गुरुदेव के गुरुवर्ग द्वारा गाए गए वैष्णव कीर्तन पूरे दिन आईसीयू वार्ड में चलाए गए।

जब भी भक्त कीर्तन करते थे, श्रील गुरुदेव अपने दाहिने हाथ से अपने वक्ष-स्थल की बायीं ओर, जहाँ हृदय स्थित है, वहाँ थपथपाने लग जाते थे। चूँकि उस समय वे बाहरी रूप से अति अल्प शब्द बोलने की लीला कर रहे थे, इसलिए कीर्तन सुनने

पर उनकी इस तरह की प्रतिक्रिया और संकेत द्वारा संभवतः वे अपनी यह शिक्षा दोहराते थे कि हमें हृदय की गहराई से कीर्तन करना चाहिए। जिस दिन कीर्तन नहीं होते, उस दिन चिकित्सक हमसे इसका कारण पूछते। तब हम सोचने लगते, "क्या चिकित्सक के माध्यम से श्रील गुरुदेव ही कीर्तन नहीं करने का कारण पूछ रहे हैं?" मेरा तो मानना है कि श्रील गुरुदेव यही संदेश बार-बार दोहराना चाहते थे कि हमें हृदय

की गहराई से निर्विराम कीर्तन करते रहना चाहिए। वे पहले भी अपनी कई हरिकथाओं और व्यक्तिगत वार्तालापों में यह अति-महत्त्वपूर्ण शिक्षा पर विशेष रूप से जोर दिया करते थे।

कुछ दिनों बाद, परम पूज्यपाद श्रीमद् भक्ति विज्ञान भारती महाराज श्रील गुरुदेव को देखने के लिए अस्पताल आए। उन्हें बताया गया कि श्रील गुरुदेव साधारणतः बाहर से निष्क्रिय और प्रतिक्रियाहीन रहते

हैं, किन्तु कीर्तन के समय वे सक्रिय हो जाते हैं। श्रील भारती महाराज ने उत्तर देते हुए कहा, "महाराज अपने हृदय की गहराईयों में भगवान् का निरंतर स्मरण कर रहे हैं, और जब कीर्तन गाए जाते हैं तो उनके हृदय के भाव बाहर प्रदर्शित हो रहे हैं। वे आप पर अहैतुकी कृपा करते हुए उनकी सेवा का अवसर प्रदान कर रहे हैं। आप पूर्ण तत्परता के साथ उनकी सेवा कीजिए।"

अस्पताल का परिसर

भक्तों की कीर्तन-ध्वनि से और आईसीयू वार्ड गुरुवर्गों के कीर्तनों (ऑडियो प्लेयर द्वारा) से निरंतर गूंजते रहते थे। किसी-किसी दिन तो भक्त आईसीयू वार्ड के अंदर ही, श्रील गुरुदेव के सामने कीर्तन करते थे। इस तरह, साधारणतः चुपचाप रहनेवाला आईसीयू वार्ड भी, लगभग सब समय, मृदंग और करताल के साथ कीर्तन की ध्वनि से गूंजता था। चिकित्सकों और अस्पताल के अन्य कर्मचारियों को इससे कोई आपत्ति नहीं रहती थी।

बल्कि जब भी उन्हें खाली समय मिलता था, वे भी उत्साह के साथ उन कीर्तनों में भाग लेते थे। इस प्रकार, पूरे अस्पताल में भक्तिमय स्पंदनों का संचार हो जाता था। यद्यपि श्रील गुरुदेव ने वहाँ न कोई हरिकथा कही, न हरिनाम की महिमा कही, और न ही किसी के साथ कोई साधारण वार्तालाप भी किया, फिर भी उस स्थान पर उनकी दिव्य उपस्थिति ही प्रत्येक व्यक्ति को भगवान के नाम का कीर्तन और श्रवण करने के लिए प्रेरित कर

रही थी।

जाँहार दर्शने मुखे आइसे कृष्णनाम।
ताँहारे जानिह तुमि 'वैष्णव प्रधान'।।
(श्रीचैतन्य चरितामृत,
मध्य-लीला, 16/74)

'(श्रीचैतन्य महाप्रभु ने कहा,) जिनके दर्शन मात्र से दूसरों के मुख से श्रीकृष्ण का नाम स्वाभाविक रूप से उच्चारित हो जाए, उन्हें तुम वैष्णवों में प्रधान समझना।'

श्रील भक्ति सिद्धांत सरस्वती गोस्वामी ठाकुर प्रभुपाद

ने उक्त छंद के 'अनुभाष्य' में लिखा– "जिस वैष्णव को देखने मात्र से देखनेवाले के मुख में श्रीकृष्ण का नाम स्वाभाविक रूप से उच्चारित हो जाता है, उसे स्वरुप-सिद्ध 'महाभागवत' जानना। वे सदा श्रीकृष्ण की विशुद्ध प्रेम-सेवा में निमग्न रहते हैं। वे-कृष्ण-विमुखता रूपी मोह-निद्रा में सोए हुए अन्य जीवों को श्रीकृष्ण और श्रीकृष्ण-भक्तों की सेवा में नियुक्त करने में समर्थ हैं।

Play Store

SrilaGurudeva

SGD